Nahr Ki Sadaaen (Hindi)

# नह्‌र की सदाएं

- रोज़ादार डाकू 7
- बन्दूक़ की एक गोली...... 13
- इयादत के 31 म-दनी फूल 18



शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्‌ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

**मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

# नहर की सदाएं

येह रिसाला ( **नहर की सदाएं** )

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

## मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# नहर की सदाएं[1]

**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान ( 24 सफ़ह़ात ) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।**

## मोतियों का ताज

**अल क़ौलुल बदीअ़** में है : इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर **मोतियों का ताज** सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं, ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया । **(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص٢٥٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدينہ

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शारजा ता मदीनतुल औलिया मुलतान (17 जुमादल उख़्रा 1418 सि.हि./20-9-1997) को ब ज़रीअ़ए टेलीफ़ोन रिले हुवा था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

**मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग थे, इस्लाम आ–वरी से क़ब्ल आप यहूदियों के बहुत बड़े आ़लिम थे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल का एक शख़्स (तौबा करने के बा'द फिर) एक फ़ाह़िशा के साथ काला मुंह कर के जब ग़ुस्ल के लिये एक नहर में दाख़िल हुवा तो **नहर की सदाएं** आने लगीं : "तुझे शर्म नहीं आती ? क्या तूने तौबा कर के येह अ़ह्द नहीं किया था कि अब कभी ऐसा नहीं करूंगा ।" येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह रोता चीख़ता येह कहता हुवा भागा : "अब कभी भी अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करूंगा ।" वोह रोता हुवा एक पहाड़ पर पहुंचा जहां बारह अफ़राद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल थे । येह भी उन में शामिल हो गया । कुछ अ़र्से के बा'द वहां क़ह़त़ पड़ा तो नेक बन्दों का वोह क़ाफ़िला ग़िज़ा की तलाश में शह़र की त़रफ़ चल दिया । इत्तिफ़ाक़ से उन का गुज़र उसी नहर की त़रफ़ हुवा । वोह शख़्स ख़ौफ़ से थर्रा उठा और कहने लगा : मैं इस नहर की त़रफ़ नहीं जाऊंगा क्यूं कि वहां मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है, मुझे उस से शर्म आती है । येह रुक गया और बारह अफ़राद नहर पर पहुंचे । तो **नहर की सदाएं** आनी शुरूअ़ हो गईं : ऐ नेक बन्दो ! तुम्हारा रफ़ीक़ कहां है ? उन्हों ने जवाब दिया : वोह कहता है : इस नहर पर मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है और मुझे उस से शर्म आती है । नहर से आवाज़ आई : "سُبْحٰنَ اللهِ ! अगर तुम्हारा कोई अ़ज़ीज़ तुम्हें ईज़ा दे बैठे मगर फिर नादिम हो कर तुम से मुआ़फ़ी मांग ले और अपनी ग़लत़ आ़दत तर्क कर दे तो क्या तुम्हारी उस से सुल्ह़ नहीं हो जाती ? तुम्हारे

रफ़ीक़ ने भी तौबा कर ली है और नेकियों में मश्ग़ूल हो गया है लिहाज़ा अब उस की अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ हो चुकी है। उसे यहां ले आओ और तुम सब यहीं नह्र के कनारे इबादत करो।'' उन्हों ने अपने रफ़ीक़ को ख़ुश ख़बरी दी और फिर येह सब मिल कर वहां मश्ग़ूले इबादत हो गए ह़त्ता की उस शख़्स का वहीं इन्तिक़ाल हो गया। इस पर **नहर की सदाएं** गूंज उठीं : ''ऐ नेक बन्दो ! इसे मेरे पानी से नहलाओ और मेरे ही कनारे दफ़्नाओ ताकि बरोज़े क़ियामत भी वोह यहीं से उठाया जाए।'' चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। रात को उस के मज़ार के क़रीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते करते सो गए। सुब्ह़ उन सब का वहां से कूच करने का इरादा था। जब जागे तो क्या देखते हैं कि उस के मज़ार के अत़राफ़ में 12 सर्व (या'नी एक दरख़्त जो सीधा और मख़रूत़ी (या'नी गाजर की) की शक्ल का होता है) के ख़ूब सूरत क़दआवर दरख़्त खड़े हैं। येह लोग समझ गए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हमारे लिये ही पैदा फ़रमाए हैं, ताकि हम कहीं और जाने के बजाए इन के साए में ही पड़े रहें। चुनान्चे वोह लोग वहीं इबादत में मश्ग़ूल हो गए। जब उन में से किसी का इन्तिक़ाल होता तो उसी शख़्स के पहलू में दफ़्न किया जाता। ह़त्ता कि सब वफ़ात पा गए। बनी इस्राईल उन के मज़ारात की ज़ियारत के लिये आया करते थे। رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى اَجْمَعِيْن **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** (کتابُ التَّوّابین ص۹۰)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कितना रह़ीम व करीम है । जब कोई बन्दा सच्चे दिल से तौबा कर लेता है तो उस से राज़ी हो जाता है । इस ह़िकायत से येह भी दर्स मिला कि गुनाह करने वाला अगर्चे लाख पर्दों में छुप कर गुनाह करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है । नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी का सिल्सिला पिछली उम्मत के मोमिनों में भी था ।

## बार बार तौबा करते रहिये !

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब गुनाह सरज़द हो जाए तो इन्सान को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ले, अगर ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत फिर गुनाह कर बैठे तो फिर तौबा कर ले, फिर ख़त़ा हो जाए तो फिर तौबा करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हरगिज़ हरगिज़ मायूस न हो, उस की रह़मत बहुत बड़ी है, यक़ीनन गुनाहों को मुआ़फ़ करने में उस की रह़मत का कोई नुक़्सान नहीं होता, बस हमें तौबा व इस्तिग़्फ़ार का सिल्सिला जारी रखना चाहिये । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ ۔ ''या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं ।'' (اِبن ماجه ج٤ص٤٩١ حديث٤٢٥٠) मा'लूम हुवा तौबा करने वाले के गुनाह मिटा दिये जाते हैं । बहर ह़ाल हमें बारगाहे रब्बे जुल जलाल में हर दम झुका रहना चाहिये और उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होना चाहिये ।

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

# क्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जाएंगे ?

**रह़मत** की बात आई है तो येह अ़र्ज़ करता चलूं कि बा'ज़ लोग ऐसे भी होते हैं जो नादानी में कह देते हैं : ''जन्नत में सिर्फ़ नेकियों के ज़रीए ही दाख़िला मिलेगा और जो गुनाह करेगा वोह लाज़िमी त़ौर पर जहन्नम में जाएगा, रह़मत से बख़्शे जाने की बात हमारी समझ में नहीं आती।'' यक़ीनन येह शैत़ान के वस्वसे हैं। वरना मैं अपनी त़रफ़ से रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की बात कहां कर रहा हूं, सुनो.....! सुनो.....! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह **24 सू-रतुज़्ज़ुमर** आयत 53 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۵۳﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने (ना फ़रमानियों के ज़रीए) अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत से ना उम्मीद न हो। बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।

**ह़दीसे** क़ुदसी है, ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रह़मत निशान है : سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ غَضَبِیْ۔ या'नी मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर सब्क़त रखती है।

(مُسلِم ص۱۴۷۱ حدیث۲۷۵۱)

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के भाईजान उस्ताज़े ज़मन, शहन्शाहे सुख़न ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान ''ज़ौक़े ना'त'' के अन्दर बारगाहे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करते हैं :

*سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ عَلٰی غَضَبِیْ — तूने जब से सुना दिया या रब*
*आसरा हम गुनाहगारों का — और मज़्बूत हो गया या रब*

(ज़ौक़े ना'त)

## आ़जिज़ बन्दे की ह़िकायत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बहुत बहुत ही बड़ी है। वोह ब ज़ाहिर किसी छोटी सी अदा पर राज़ी हो जाए तो ऐसा नवाज़ता है कि बन्दा सोच भी नहीं सकता। चुनान्चे "**किताबुत्ताव्वाबीन**" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़्बार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल के दो[2] आदमी मस्जिद की त़रफ़ चले, एक तो मस्जिद में दाख़िल हो गया मगर दूसरे पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ त़ारी हो गया और वोह बाहर ही बैठ गया और कहने लगा : "मैं गुनहगार इस क़ाबिल कहां जो अपना गन्दा वुजूद ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाक घर में दाख़िल हो सकूं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस की येह आ़जिज़ी पसन्द आ गई और उस का नाम सिद्दीक़ीन में दर्ज फ़रमा दिया। (كتابُ التَّوّابِين ص٨٣) याद रहे ! "सिद्दीक़" का द-रजा "वली" और "शहीद" से भी बड़ा होता है।

## नादिम बन्दे की ह़िकायत

**इसी** त़रह़ की एक ह़िकायत **किताबुत्तव्वाबीन सफ़ह़ा 83** पर लिखी है : एक इस्राईली से गुनाह सरज़द हो गया, वोह बेह़द नादिम हुवा और बे क़रार हो कर इधर से उधर भागने लगा कि किसी त़रह़ उस का गुनाह मुआ़फ़ हो जाए और परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे रह़मत में उस की बे क़रारी भरी नदामत को श-रफ़े क़बूलिय्यत

ह़ासिल हुई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को विलायत के आ'ला तरीन रुत्बे **सिद्दीक़िय्यत** से नवाज़ दिया ।

## शरमिन्दगी तौबा है

**सरकारे** नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी शरमिन्दगी तौबा है । (اَلْمُستَدرَك ج٥ ص٣٤٦ حديث٧٦٨٧) ह़क़ीक़त येह है कि बा'ज़ अवक़ात गुनाहों पर **नदामत** वोह काम कर जाती है जो बड़ी से बड़ी इ़बादत भी नहीं कर सकती, इस का मत़लब हरगिज़ येह भी नहीं कि इ़बादत न की जाए, येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर है, कभी नदामत काम कर जाती है तो कभी इ़बादत । चुनान्चे

## रोज़ादार डाकू

**रौज़ुर्रयाह़ीन** में है, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मैं एक क़ाफ़िले के हमराह मुल्के **शाम** जा रहा था, रास्ते में डाकूओं की जमाअ़त ने हमें लूट लिया और सारा माल व अस्बाब अपने सरदार के सामने ढेर कर दिया, सामान में से एक शकर और बादाम की थेली निकली, सारे डाकूओं ने निकाल कर खाना शुरूअ़ कर दिया मगर उन के सरदार ने उस में से कुछ न खाया, मैं ने पूछा : सब खा रहे हैं मगर आप क्यूं नहीं खा रहे ? उस ने कहा : **मैं रोज़े से हूं ।** मैं ने ह़ैरत से कहा : तुम लूटमार भी करते हो और **रोज़ा** भी रखते हो ! सरदार बोला : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ के लिये भी तो कोई राह बाक़ी रखनी चाहिये । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : कुछ अ़र्से बा'द मैं ने

उसी **डाकूओं के सरदार** को एहराम की हालत में तवाफ़े ख़ानए का'बा में मश्ग़ूल देखा, उस के चेहरे पर इबादत का नूर था और मुजा-हदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था, मैं ने **तअ़ज्जुब** के साथ पूछा : क्या तुम वोही शख़्स नहीं हो ? वोह बोला : "जी हां मैं वोही हूं और सुनिये ! उसी **रोज़े** ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मेरी सुल्ह करवा दी है।" (رَوْضُ الرَّیاحِین ص۲۹۳)

## हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि किसी नेकी को छोटी समझ कर तर्क नहीं कर देना चाहिये, क्या पता वोही छोटी नज़र आने वाली नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल हो जाए और हमारे दोनों जहां संवर जाएं। इस हिकायत से **नफ़्ली रोज़े** की **अहम्मिय्यत** भी मा'लूम हुई। बेशक हर एक कसरत के साथ नफ़्ली रोज़े रखने की ताक़त नहीं पाता, ताहम कम अज़ कम **हर पीर शरीफ़ का रोज़ा** तो रख ही लेना चाहिये कि **सुन्नत** है नीज़ नेक बनाने के अ़ज़ीम नुस्ख़े **म-दनी इन्आ़मात** में से 58वां म-दनी इन्आ़म भी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी से वाबस्ता कसीर इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस "म-दनी इन्आ़म" के मुताबिक़ पीर शरीफ़ का रोज़ा रखने की सुन्नत अदा करते हैं और आ़शिक़ाने रसूल के हर दिल अ़ज़ीज़ 100 फ़ी सदी इस्लामी चेनल **म-दनी चेनल** पर हर पीर शरीफ़ को बराहे रास्त (या'नी LIVE) "मुनाजाते इफ़्तार" का सिल्सिला होता और आ़शिक़ाने रसूल के इफ़्तार करने का रूह परवर मन्ज़र दिखाया जाता है। आप भी ब निय्यते सवाब "म-दनी चेनल" देखते रहिये और दूसरों को भी देखने की दा'वत दे कर ख़ूब सवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना लूटिये।

## आतश परस्त घराने का क़बूले इस्लाम

**आइये !** लगे हाथों "म-दनी चेनल" की एक **म-दनी बहार** सुनते हैं **:** बम्बई (हिन्द) के जहांगीर नामी एक ख़ूबरू नौ जवान फ़िल्मी अदाकार के बयान का लुब्बे लुबाब है **:** हमारा सारा घर आग की पूजा किया करता था, ऐसे में **म-दनी चेनल** हमारे लिये गोया पैग़ामे नजात बन कर आया ! क़िस्सा यूं है कि मेरी अम्मी बड़े शौक़ से म-दनी चेनल देखा करती थी, एक बार मैं ने सोचा कि आख़िर अम्मीजान इतनी दिलचस्पी के साथ "सब्ज़ इमामे वाले मौलानाओं" की बातों को क्यूं सुना करती है, लाओ मैं भी तो देखूं कि येह "मौलाना लोग" क्या बोलते हैं ! चुनान्चे मैं ने भी T.V. पर "म-दनी चेनल" लगाया **: म-दनी मुज़ा-करे** का सिल्सिला था, मुझे बहुत अच्छा लगा, मैं ग़ौर से सुनता रहा, म-दनी मुज़ा-करे की बातें तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त होती रहीं, मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी और मेरा ज़मीर पुकार पुकार कर कहने लगा **: जहांगीर !** तू ग़लत राह पर भटक रहा है, अगर नजात चाहता है तो सब्ज़ इमामे वालों का सच्चा दीन या'नी मज़्हबे इस्लाम क़बूल कर ले, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर राबिता किया और मुसल्मान हो गया। मैं ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से भी राबिता किया, उन्हों ने मेरी ख़ूब रहनुमाई फ़रमाई, उन के हुस्ने अख़्लाक़ ने मुझे बेहद **मु-तअस्सिर** किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से अब हमारा सारा घर इस्लाम के दामन में आ चुका है। मैं रात के तीन तीन बजे तक **म-दनी चेनल** पर आने वाला "**म-दनी मुज़ा-करा**" देखता

रहा हूं, उस में एक बार दाढ़ी रखने की तरग़ीब सुन कर मैं ने दाढ़ी भी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी है और बम्बई के दा'वते इस्लामी वाले **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में रह कर इस्लामी न-ज़रिय्यात व नमाज़ वग़ैरा इ़बादात की भी ता'लीम ह़ासिल कर रहा हूं ।

*म-दनी चेनल लाएगा सुन्नत की घर घर में बहार*
*कर दे मौला दो जहां में नाज़िरीं का बेड़ा पार*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बात बहुत दूर निकल गई, उस रोज़े की ब-र-कत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का तज़्किरा हो रहा था, سُبْحٰنَ اللهِ ! डाकूओं के सरदार को **रोज़े** ने कहां से कहां पहुंचा दिया ! रोज़े की ब-र-कत से उसे हिदायत भी मिली और इ़बादतो रियाज़त की सआ़दत भी मिली ।

## बख़्शिश का बहाना

**कीमियाए सआ़दत** में ह़ज़रते शैख़ किताबी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **जुनैद** बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? फ़रमाने लगे : मेरी इ़बादतें और रियाज़तें तो काम न आईं, अलबत्ता रात को उठ कर जो दो रक्अ़त **तहज्जुद** पढ़ लिया करता था उसी के सबब मग़्फ़िरत हो गई ।

**(کیمیائے سعادت ج۲ ص۱۰۰۷)**

رَحْمَتِ حق ''بہا'' نہ می جوید
رَحْمَتِ حق ''بہانہ'' می جوید

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ''बहा'' या'नी क़ीमत नहीं मांगती बल्कि उस की रह़मत तो ''बहाना'' ढूंडती है)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल की भी आ़दत डालनी और ख़ुसूसन **तहज्जुद** तो हरगिज़ नहीं छोड़नी चाहिये, क्या मा'लूम **तहज्जुद** में उठने की मशक़्क़त बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में क़बूलिय्यत पा जाए और हमारी मग़्फ़िरत का बहाना बन जाए।

## बा'ज़ मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे

**ख़बरदार !** इस रह़मत भरे बयान का मत़लब कहीं कोई येह न समझे कि चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है लिहाज़ा अब नमाज़ें छोड़ दो..... र-मज़ान के रोज़े भी मत रखो..... T.V. और इन्टरनेट के रू बरू बैठो और ख़ूब फ़िल्में डिरामे देखो..... ख़ूब बद निगाही करो..... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है अब मां बाप को सताना शुरूअ़ कर दो..... ख़ूब गालियां बको..... कसरत से झूट बोलो..... मुसल्मानों की ख़ूब **ग़ीबतें** करो..... मुसल्मानों के दिल दुखाओ..... बद अख़्लाक़ी के साबिक़ा सारे रेकॉर्ड तोड़ दो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है। दाढ़ी मुंडवा दो या ख़श्ख़शी दाढ़ी रखो..... चोरी करो..... डाका डालो..... ज़ुल्मो सितम की आंधियां चला दो..... ख़ूब शराब पियो..... जूआ खेलो बल्कि जूआ और मुनश्शियात का अड्डा ही खोल डालो ! जो जो गुनाह अभी तक नहीं कर पाए مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह भी कर डालो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

रह़मत बहुत बड़ी है । **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर अपना ख़ूब फ़ज़्लो करम फ़रमाए और आप को बे ह़िसाब बख़्शे, आमीन । इस त़रह़ शैत़ान कान पकड़ कर आप को अपनी इत़ाअ़त में न लगा दे । याद रखिये ! जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़ीम व करीम है वहां जब्बार व क़ह्हार भी है, जहां वोह नुक्ता नवाज़ है वहां बे नियाज़ भी है । अगर उस ने किसी छोटे से गुनाह पर गिरिफ़्त फ़रमा ली तो कहीं के न रहेंगे । ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! येह त़ै है कि कुछ न कुछ मुसल्मान अपने गुनाहों के सबब दाख़िले जहन्नम भी होंगे । हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर** से हर वक़्त लरज़ां व तरसां रहना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि उन जहन्नम में जाने वालों की फ़ेह्रिस में हमारा नाम भी शामिल हो ।

## फ़ारूक़े आ'ज़म की म-दनी सोच

**इमामुल आ़दिलीन, अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **म-दनी सोच** पर क़ुरबान जाइये कि उम्मीद हो तो ऐसी और ख़ौफ़ भी हो तो ऐसा ! चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब बन्दों में से सिर्फ़ एक को दाख़िले जहन्नम फ़रमाने वाला हो तो मैं ख़ौफ़ करूंगा कि कहीं ऐसा न हो कि जहन्नम में दाख़िल होने वाला वोह एक बन्दा मैं ही हूं और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिवाए एक के सब को जहन्नम में दाख़िल फ़रमाने वाला हो तो मैं उम्मीद करूंगा कि जहन्नम से मह़फ़ूज़ रहने वाला वोह एक बन्दा मैं ही हूं । (حلیۃ الاولیاء ج ۱ ص ۸۹) बहर ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस के क़हरो ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिये ।

## बन्दूक़ की एक गोली.....

**मैं** आप को अपनी बात अ़क़्ली दलील से समझाने की कोशिश करता हूं, म-सलन इस वक़्त इस इज्तिमाअ़ में दस हज़ार इस्लामी भाई मौजूद हों और कोई दह्शत गर्द क़रीबी मकान की छत पर पिस्तोल ले कर खड़ा हो जाए और ए'लान करे मैं सिर्फ़ एक गोली चलाता हूं अगर लगेगी तो सिर्फ़ एक ही को लगेगी बाक़ियों को कुछ नहीं कहूंगा । क्या ख़याल है ? सिर्फ़ एक ही को तो गोली लगनी है ! क्या बक़िय्या नव हज़ार नव सो निनान्वे इस्लामी भाई बे ख़ौफ़ हो जाएंगे ? हरगिज़ नहीं बल्कि हर एक इस ख़ौफ़ से भाग खड़ा होगा कि कहीं किसी एक को लगने वाली "वोह गोली" मुझे ही न आ लगे ! उम्मीद है मेरी बात समझ में आ गई होगी ।

## आग की जूतियां

जब येह तै़ शुदा अम्र है कि कुछ न कुछ मुसल्मान गुनाहों के सबब जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे तो आख़िर हर मुसल्मान इस बात से क्यूं नहीं डरता कि कहीं मुझे भी जहन्नम में न डाल दिया जाए । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बन्दूक़ की गोली की तक्लीफ़ जहन्नम के अ़ज़ाब के सामने कुछ भी नहीं । **मुस्लिम** शरीफ़ में है : "जहन्नम का सब से हलका अ़ज़ाब येह है कि मुअ़ज़्ज़ब (या'नी अ़ज़ाब पाने वाले) को **आग की जूतियां** पहनाई जाएंगी जिस की गरमी और तपिश से उस का दिमाग़ पतीली की त़रह़ खौलता होगा, वोह येह समझेगा कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब मुझी पर है ।" (مُسلِم ص ١٣٤ حديث ٢١٢) **बुख़ारी** शरीफ़ में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत सब से कम अ़ज़ाब वाले दोज़ख़ी से फ़रमाएगा : "जो कुछ (माल व दौलत वग़ैरा) ज़मीन में है अगर वोह तेरी मिल्क होता तो क्या तू अ़ज़ाब से छुटकारा पाने के

लिये येह फ़िदये में दे देता ?" तो वोह कहेगा : "ज़रूर ।" (بُخاری ج ٤ ص ٢٦١ حدیث ٦٥٥٧) या'नी सभी कुछ दे डालूंगा कि कहीं येह **आग की जूतियां** मेरे पाउं से निकलती हों ! बस किसी त़रह़ भी इस अ़ज़ाब से मुझे छुटकारा मिल जाए ।

## क्या सब से हलका अ़ज़ाब बरदाश्त हो जाएगा ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सोचो ! बार बार सोचो ! अगर किसी छोटे से गुनाह के सबब येही सब से छोटा और हलका अ़ज़ाब किसी पर मुसल्लत़ कर दिया गया तो उस का क्या बनेगा ? म-सलन किसी को गाली दी ह़ालां कि येह कबीरा गुनाह है फिर भी अगर इस जुर्म की पादाश में सब से हलका अ़ज़ाब भी हो गया तो क्या होगा ? मां बाप को सताने के जुर्म में कि येह भी कबीरा गुनाह है मगर इस जुर्म पर भी अगर सब से हलका अ़ज़ाब ही हो जाए तो इस की बरदाश्त किस में है ? इसी त़रह़ रोज़ मर्रा किये जाने वाले गुनाहों पर ग़ौर करते चले जाइये । झूट बोलने के सबब, किसी की ग़ीबत करने के सबब, **चुग़ुल ख़ोरी** के सबब, ह़राम रोज़ी कमाने के सबब, नशा करने के सबब, फ़िल्में और डिरामे देखने के सबब, गाने बाजे सुनने के सबब, बल्कि T.V. पर सिर्फ़ औ़रत से ख़बरें सुनने के सबब अगर सब से हलका अ़ज़ाब हो गया तो क्या होगा ? वोह औ़रत भी कितनी बद नसीब है जो चन्द सिक्कों की ख़ात़िर T.V. पर आ कर ख़बरें सुनाती है । काश ! उस को येह एह़सास हो जाता कि मेरे ज़रीए़ लाखों मर्द बद निगाही का गुनाह कर के, अपनी आंखों को ह़राम से पुर कर के अपनी आंखों में जहन्नम की आग भरने का सामान कर रहे हैं और इस सबब से मैं ख़ुद भी बहुत ज़ियादा गुनहगार हुई जा रही हूं ! बहर ह़ाल जो इस त़रह़ अपने दिल को बहलाता है कि मैं ने तो सिर्फ़ ख़बरों के लिये T.V. रखा है, वोह कान खोल कर सुन ले कि मर्द का

**अज्नबिय्या** औ़रत को देखना या औ़रत का अज्नबी मर्द को ब शह्वत देखना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, तो अगर T.V. पर सिर्फ़ ख़बरें देखने, सुनने के सबब ही जहन्नम का हलका अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया और आग की जूतियां पहना दी गईं तो क्या बनेगा ? अपने अन्दर इस्लाह़ का जज़्बा बेदार करने के लिये अपना ज़ेह्न बनाइये कि अगर बिग़ैर शर-ई उ़ज़्र के मैं ने नमाज़ की जमाअ़त तर्क कर दी और सब से हलका अ़ज़ाब दे दिया गया तो मेरा क्या होगा ! अगर बे पर्दगी कर ली, अपनी भाभी से बे तकल्लुफ़ी की या उस को क़स्दन देखा, इसी त़रह़ चची, ताई, मुमानी, साली, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद, चचाज़ाद या तायाज़ाद से पर्दा न किया उन के सामने बिला तकल्लुफ़ आते जाते रहे, उन को देखते रहे, उन से हंस हंस कर बातें करते रहे और इन जराइम में से किसी एक गुनाह की ह़द तक पहुंचने वाले जुर्म की पादाश में अगर पाउं में आग की जूतियां डाल दी गईं तो क्या बनेगा ? जी हां ! भाभी, चची, ताई, मुमानी, वग़ैरा वग़ैरा जिन का तज़्किरा हुवा येह सब अज्नबिय्या और ग़ैर महूरमा औ़रतें हैं इन से और हर उस औ़रत से शरीअ़त ने पर्दे का हुक्म दिया है जिन से शादी हो सकती है। इसी त़रह़ औ़रत भी तमाम ग़ैर महारिम रिश्तेदारों से पर्दा करे।

## जहन्नम के ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब की झल्कियां

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अपने आप को कम अज़ कम छोटे और हलके अ़ज़ाब से ही डरा दीजिये ह़ालां कि जहन्नम में एक से एक ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब हैं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब बयानाते अ़त्तारिय्या जिल्द 2 **सफ़ह़ा** 293 ता 297 पर है : वोह बन्दा भी कितना अ़जीब है जो येह जानता है कि दोज़ख़ सख़्त तरीन अ़ज़ाब का मक़ाम है फिर भी गुनाहों का

इरतिकाब करता है। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर **जहन्नम** को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं। अहले जहन्नम को जो मश्रूब पीने के लिये दिया जाएगा वोह इस क़दर ख़तरनाक है कि अगर उस का एक डोल दुन्या में बहा दिया जाए तो दुन्या की तमाम खेतियां बरबाद हो जाएं न अनाज उगे न फल। **जहन्नम** के सांप और बिच्छू बेहद ख़ौफ़नाक हैं। हदीस शरीफ़ में है : "जहन्नम में अ-जमी ऊंटों की गरदन की मिस्ल बड़े बड़े **सांप** होंगे जो दोज़ख़ियों को डसते होंगे वोह ऐसे ज़हरीले होंगे कि अगर एक मर्तबा काट लेंगे तो चालीस साल तक उन के ज़हर की तक्लीफ़ नहीं जाएगी और लगाम लगाए हुए **ख़च्चरों** के बराबर बड़े बड़े **बिच्छू** जहन्नमियों को डंक मारते रहेंगे कि एक बार डंक मारने की तक्लीफ़ चालीस साल तक बाक़ी रहेगी।" (مسند امام احمد ج ٦ ص ٢١٦ حدیث ١٧٧٢٩)

**तिरमिज़ी** की रिवायत में है : "जहन्नम में "**सऊ़द**" नामी आग का एक पहाड़ है जिस की बुलन्दी सत्तर बरस की राह है। काफ़िर जहन्नमियों को उस पर चढ़ाया जाएगा। सत्तर बरस में वोह उस की बुलन्दी पर पहुंचेंगे फिर ऊपर से उन्हें गिराया जाएगा तो सत्तर बरस में वोह नीचे पहुंचेंगे इसी तरह उन को अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।" (ترمذی ج ٤ ص ٢٦٠ حدیث ٢٥٨٥) जहन्नम के ऐसे ऐसे **ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब** का तज़्किरा सुनने के बा वुजूद भी जो गुनाहों से बाज़ न आए उस पर वाक़ेई तअ़ज्जुब है। आख़िर इन्सान को इस दुन्या ने क्या दे देना है जो इस की रंगीनियों में गुम और इस की लूटमार में मसरूफ़ है।

## जहन्नम की ख़तरनाक ग़िज़ाएं

**लज़ीज़** ग़िज़ाएं मज़े ले ले कर खाने वालों को जहन्नम की भयानक ग़िज़ाओं को नहीं भूलना चाहिये ! **तिरमिज़ी** की रिवायत में है :

दोज़ख़ियों पर भूक मुसल्लत़ की जाएगी तो येह भूक उन सारे अ़ज़ाबों के बराबर हो जाएगी जिन में वोह मुब्तला हैं वोह फ़रियाद करेंगे तो उन्हें ज़रीअ़ (ज़हरीली कांटेदार घास) में से दिया जाएगा, जो न मोटा करे न भूक से नजात दे । फिर वोह खाना मांगेंगे तो उन्हें फन्दा लगने वाला खाना दिया जाएगा तो उन्हें याद आएगा कि वोह दुन्या में फन्दा (लगे निवाले) को पानी से निगलते थे चुनान्चे वोह पानी मांगेंगे तो उन को लोहे के ज़म्बूर (सन्सी) से **खौलता हुवा पानी** दिया जाएगा जब वोह उन के मुंह के क़रीब होगा तो उन के मुंह भून देगा फिर जब उन के पेट में दाख़िल होगा तो उन के पेटों की हर चीज़ काट डालेगा । (تِرمذی ج٤ ص٢٦٣ حدیث ٢٥٩٥) एक और ह़दीसे पाक में है : "**ज़क़्कूम** (या'नी थोहड़ जो कि दोज़ख़ियों को खिलाया जाएगा) का एक क़त़रा अगर दुन्या पर टपक पड़े तो दुन्या वालों के खाने पीने की तमाम चीज़ों को (तल्ख़ व बदबूदार बना कर) ख़राब कर दे ।" (ابن ماجه حدیث ٤٣٢٥ ج٤ ص٥٣١) आह ! जहन्नम में ऐसा होलनाक अ़ज़ाब होने के बा वुजूद आख़िर इन्सान गुनाहों पर इतना दिलेर क्यूं है ?

## न मायूस हों न बे ख़ौफ़

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठिये ! और अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये ! हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस के क़हरो ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिये, दोनों ही सूरतों में तबाही है, जो कोई रह़मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गया वोह भी हलाक हुवा और जो गुनाहों पर दिलेर हो गया और पकड़ में आ गया तो वोह भी बरबाद हुवा । बहर ह़ाल ग़ैरत व मुरव्वत का तक़ाज़ा भी येही है कि जिस परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने महज़ अपने फ़ज़्लो करम से हमें बे शुमार ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं उस की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की जाए और उस के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

दामने करम से हर दम वाबस्ता रहते हुए उन की सुन्नतों को अपनाया जाए कि इसी में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई है ।

*कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !*
*कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा ! कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब !*
*अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*
*गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساكِر ج٩ ص٣٤٣)

*सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा*
*जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## "इयादत करना रसूले मोह़्तरम की सुन्नते मुबा-रका है" के इक्तीस हुरूफ़ की निस्बत से इयादत के 31 म-दनी फूल

**8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ عُوْدُوا الْمَرِيْضَ या'नी मरीज़ की **इयादत** करो (الادب المفرد ص١٣٧ حديث٥١٨) ﴿2﴾ जो शख़्स किसी मरीज़ की **इयादत** के लिये जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **पछत्तर हज़ार (75,000) फ़िरिश्तों** का साया करता है और उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखता है और हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह

मिटाता है और एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है यहां तक कि वोह अपनी जगह पर बैठ जाए, जब वोह बैठ जाता है तो रह़मत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी (مُعْجَمُ اَوْسَط ج۳ص۲۲۲ حدیث ٤٣٩٦) ﴿3﴾ जो शख़्स किसी मरीज़ की **इयादत** को जाता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है : तुझे बिशारत (या'नी ख़ुश ख़बरी) हो तेरा चलना अच्छा है और तूने जन्नत की एक मन्ज़िल को अपना ठिकाना बना लिया (ابن ماجه ج۲ ص۱۹۲ حدیث ۱٤٤٣) ﴿4﴾ जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की **इयादत** के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ होगा (تِرمذی ج۲ص۲۹۰ حدیث ۹۷۱) ﴿5﴾ जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया फिर अपने मुसल्मान भाई की सवाब की निय्यत से **इयादत** की तो उसे जहन्नम से 70 साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा (ابوداؤد ج۳ص۲٤۸ حدیث ۳۰۹۷) ﴿6﴾ जब तू मरीज़ के पास जाए तो उस से कह कि तेरे लिये दुआ़ करे कि उस की दुआ़ फ़िरिश्तों की दुआ़ की मानिन्द है (ابنِ ماجہ ج۲ ص۱۹۱ حدیث ۱٤٤۱) ﴿7﴾ मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ़ रद नहीं होती (الترغیب والترھیب ج٤ص۱٦٦ حدیث ۱۹) ﴿8﴾ जब कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान की **इयादत** को जाए तो 7 बार येह दुआ़ पढ़े : اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ۔[1] अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा हो जाएगी (ابوداؤد ج۳ ص ۲۰۱ حدیث ۳۱۰٦) ❁ मरीज़ की **इयादत** करना सुन्नत है अगर मा'लूम है कि **इयादत** के लिये जाने से उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा, ऐसी ह़ालत में **इयादत** के लिये मत जाइये (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 505) ❁ अगर मरीज़ से आप के दिल में रन्जिश या त़बीअ़त को उस से मुना-सबत नहीं फिर भी **इयादत** कीजिये

1. तरजमा : मैं अ़-ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

❁ इत्तिबाए सुन्नत की निय्यत से **इयादत** कीजिये अगर महूज़ इस लिये बीमार पुर्सी की, कि जब मैं बीमार पड़ूं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आए तो सवाब नहीं मिलेगा ❁ किसी की **इयादत** के लिये जाएं और मरज़ की सख़्ती देखें तो उस को डराने वाली बातें न करें म-सलन तुम्हारी ह़ालत ख़राब है और न ही इस अन्दाज़ पर सर हिलाएं जिस से ह़ालत का ख़राब होना समझा जाता है ❁ इयादत के मौक़अ़ पर मरीज़ या दुखी शख़्स के सामने अपने चेहरे पर रन्जो ग़म की कैफ़िय्यत नुमायां कीजिये ❁ बातचीत का अन्दाज़ हरगिज़ ऐसा न हो कि मरीज़ या उस के अ़ज़ीज़ को वस्वसा आए कि येह हमारी परेशानी पर ख़ुश हो रहा है ! ❁ मरीज़ के घर वालों से भी इज़्हारे हमदर्दी कीजिये और जो ख़िदमत या तआ़वुन कर सकते हों कीजिये ❁ मरीज़ के पास जा कर उस की त़बीअ़त पूछिये और उस के लिये सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत की दुआ़ कीजिये ❁ **नबिय्ये रह़मत**, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा येह थी कि जब किसी मरीज़ की **इयादत** को तशरीफ़ ले जाते तो येह फ़रमाते **:** لَا بَأْسَ طُهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى (بخاري ج٢ ص ٥٠٥ حديث ٣٦١٦) ❁ मरीज़ से अपने लिये दुआ़ करवाइये कि मरीज़ की दुआ़ रद नहीं होती ❁ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मरीज़ की पूरी **इयादत** येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ? (ترمذی ج ٤ ص ٣٣٤ حديث ٢٧٤٠) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं **:** या'नी जब कोई शख़्स किसी बीमार की मिज़ाज पुर्सी करने जावे तो अपना हाथ उस की पेशानी पर रखे फिर ज़बान से येह (या'नी आप की त़बीअ़त कैसी है) कहे, इस से बीमार को तसल्ली होती है, मगर बहुत देर तक हाथ न रखे रहे, येह हाथ रखना इज़्हारे **मह़ब्बत** के लिये है (मिरआत, जि. 6, स. 358 बि तसर्रुफ़िन) مدینہ

1. तरजमा **:** कोई ह़रज की बात नहीं **अल्लाह तआ़ला** ने चाहा तो येह मरज़ (गुनाहों से) पाक करने वाला है ।

❁ मरीज़ के सामने ऐसी बातें करनी चाहिएं जो उस के दिल को भली मा'लूम हों, बीमारी के फ़ज़ाइल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के तज़्किरे कीजिये ताकि उस का ज़ेह्न सवाबे आख़िरत की त़रफ़ माइल हो और वोह शिक्वा व शिकायत के अल्फ़ाज़ ज़बान पर न लाए ❁ इ़यादत करते हुए मौक़अ़ की मुना-सबत से मरीज़ को नेकी की दा'वत भी पेश कीजिये, ख़ुसूसन **नमाज़** की पाबन्दी का ज़ेह्न दीजिये कि बीमारियों में कई नमाज़ी भी नमाज़ों से ग़ाफ़िल हो जाते हैं ❁ मरीज़ को **म-दनी चेनल** देखने की रग़बत दिलाइये और उस की ब-र-कतों से आगाह कीजिये ❁ मरीज़ को **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की और ख़ुद सफ़र के क़ाबिल न हो तो अपनी त़रफ़ से घर के किसी फ़र्द को सफ़र करवाने की तरग़ीब फ़रमाइये। और म-दनी क़ाफ़िलों की वोह **म-दनी बहारें** सुनाइये जिन में दुआ़ओं की ब-र-कतों से मरीज़ को शिफ़ाएं मिली हैं ❁ मरीज़ के पास ज़ियादा देर तक न बैठिये और न शोरो ग़ुल कीजिये हां अगर बीमार ख़ुद ही देर तक बिठाए रखने का ख़्वाहिश मन्द हो तो मुम्किना सूरत में आप उस के जज़्बात का एह़तिराम कीजिये ❁ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि मरीज़ या उस के नुमायन्दे से मिलते हैं तो कुछ न कुछ इ़लाज बताते हैं और बा'ज़ तो मरीज़ से इसरार करते हैं कि मैं जो इ़लाज बता रहा हूं वोह कर लो, फ़ुलां दवा ले लो, ठीक हो जाओगे ! मरीज़ को चाहिये कि "जिस तिस" (या'नी हर किसी) का बताया हुवा इ़लाज न करे, कि "नीम ह़कीम ख़त़रए जान", किसी का बताया हुवा इ़लाज करने से पहले अपने त़बीब से मश्वरा कर ले। ख़बरदार ! जो त़बीब न होने के बा वुजूद इ़लाज बताते रहते हैं वोह इस से बाज़ रहें ❁ मरीज़ की इ़यादत के मौक़अ़ पर तोह़फ़े लाना उ़म्दा काम है मगर न लाने की सूरत में इ़यादत ही न करना और दिल में येह ख़याल करना कि अगर कुछ न ले कर जाएगा तो वोह क्या सोचेंगे कि ख़ाली हाथ इ़यादत के लिये आ गए। ख़ाली हाथ भी इ़यादत कर ही लेनी चाहिये न करना सवाब

से महरूमी का बाइस है ❁ आप इ़यादत के लिये जाते हुए अगर फल और बिस्किट वग़ैरा तह़ाइफ़ ले जाने लगें तो मश्वरा है कि मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ कुछ **म-दनी रसाइल** भी ले जा कर मरीज़ को पेश कीजिये ताकि वोह मुलाक़ातियों, (और अगर अस्पताल में हो तो) पड़ोसी मरीज़ों और उन के अ़ज़ीज़ों को तोहफ़तन दे सकें बल्कि ज़हे नसीब ! मरीज़ ख़ुद भी कुछ म-दनी रसाइल हदिय्यतन मंगवा कर इस ग़रज़ से अपने पास रख कर सवाब कमाए ❁ फ़ासिक़ की **इ़यादत** भी जाइज़ है, क्यूं कि **इ़यादत** हुक़ूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 505) ❁ मुरतद और काफ़िरे ह़रबी की इ़यादत जाइज़ नहीं (फ़ी ज़माना दुन्या में सारे काफ़िर ह़रबी हैं) ❁ बद मज़ह़ब (ग़ैरे मुरतद) की इ़यादत करना मन्अ़ है।

**हज़ारों सुन्नतें** सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

*लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो*
*होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये**

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

**14 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि.**
**2-9-2012**

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

## फ़ेहरिस



| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| मोतियों का ताज | 1 | बख़्शिश का बहाना | 10 |
| अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ देख रहा है | 4 | बा'ज़ मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे | 11 |
| बार बार तौबा करते रहिये ! | 4 | फ़ारूक़े आ'ज़म की म-दनी सोच | 12 |
| क्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जाएंगे ? | 5 | बन्दूक़ की एक गोली...... | 13 |
| आ़जिज़ बन्दे की ह़िकायत | 6 | आग की जूतियां | 13 |
| नादिम बन्दे की ह़िकायत | 6 | क्या सब से हलका अ़ज़ाब बरदाश्त हो जाएगा ? | 14 |
| शरमिन्दगी तौबा है | 7 | जहन्नम के ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब की झल्कियां | 16 |
| रोज़ादार डाकू | 7 | जहन्नम की ख़त़रनाक ग़िज़ाएं | 17 |
| हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखिये | 8 | न मायूस हों न बे ख़ौफ़ | 18 |
| आतश परस्त घराने का क़बूले इस्लाम | 9 | इ़यादत के 31 म-दनी फूल | 19 |



## ماخذ و مراجع



| کتاب | مطبوعہ | کتاب | مطبوعہ |
|---|---|---|---|
| قرآنِ پاک | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی | حلیۃ الاولیاء | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| بخاری | دار الکتب العلمیہ بیروت | الترغیب والترھیب | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| مسلم | دار ابن حزم بیروت | ابن عساکر | دار الفکر بیروت |
| ابوداود | دار احیاء التراث العربی بیروت | کیمیائے سعادت | انتشارات گنجینہ تہران |
| ترمذی | دار الفکر بیروت | القول البدیع | مؤسسۃ الریان بیروت |
| ابن ماجہ | دار المعرفہ بیروت | کتاب التوابین | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| الادب المفرد | طشقند از بکستان | روض الریاحین | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| مسند امام احمد | دار الفکر بیروت | مراۃ | ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور |
| معجم اوسط | دار الکتب العلمیہ بیروت | فتاویٰ رضویہ | رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور |
| مستدرک | دار المعرفہ بیروت | بہار شریعت | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म–दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म–दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म–दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म–दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म–दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब–र–कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म–दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म–दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ










## मक–त–बतुल मदीना की शाख़ें

**मुम्बई :** 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
**देहली :** 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
**नागपूर :** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
**अजमेर शरीफ़ :** 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
**हैदराबाद :** पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
**हुब्ली :** A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

**मक–त–बतुल मदीना®**
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net